अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2016) | दिनांक 22.12.2016

तृतीय वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

नव पदार्थ – पुण्य, पाप – 50

प्र.1 किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें – 16

(पुण्य – किन्हीं पांच प्रश्नों का उत्तर दें)

(क) तेजस व कार्मण शरीर के अंगोपांग क्यों नहीं होते?

(ख) आठ कर्मों में पाप रूप कितने व पुण्य रूप कितने कर्म हैं?

(ग) दस अंग वाली भोग सामग्री कौन सी है?

(घ) तीर्थंकर गोत्रबंध हेतुओं में विनय तत्त्वार्थ से क्या तात्पर्य है?

(ङ) जीव अकर्कश वेदनीय कर्म का बंध कैसे करते हैं?

(च) पराघात शुभ नाम किसे कहते हैं?

(छ) पुण्य की अनंत पर्याय कैसे है?

(पाप – किन्हीं तीन प्रश्नों का उत्तर दें)

(ज) जाति विहीनता व कुल विहीनता से क्या तात्पर्य है?

(झ) 'असदभूतदोषोद्भावनम' का क्या तात्पर्य है?

(ञ) दर्शनावरणीय कर्म की प्रकृति 'स्त्यानर्द्धि' का भावार्थ लिखें।

(ट) आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीय कर्म किसे कहते हैं?

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर दें – 10

(क) पुण्य – कर्मों के नाम किस आधार पर हैं? तथा पुण्यकर्म की सर्वमान्य प्रकृतियां कितनी हैं? 'अथवा' कामभोग का क्या अर्थ है? ये कैसे प्राप्त होते हैं? तथा आचार्य भिक्षु ने पुण्य जनित कामभोगों को विषतुल्य क्यों कहा है?

(ख) पाप – जीव भारी व हल्का कैसे होता है? 'अथवा' मोहनीय कर्म के स्वभाव व उसके भेदों का उल्लेख करें।

प्र.3 निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए – 24

(क) पुण्य – पौदगलिक सुख व आत्मिक सुख में क्या अंतर है? 'अथवा' क्या सावद्य दान से पुण्य प्राप्त होता है?

(ख) पाप – नो कषाय की नौ प्रकृतियों को समझाएं। 'अथवा' दर्शनावरणीय कर्म पर विस्तार से प्रकाश डालें।

अवबोध : निर्जरा से देवगति – 30

प्र.4 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्य में दें – 6

(क) चौदहवें गुणस्थान में कौनसी निर्जरा होती है?

(ख) बंध से क्या नये कर्मों का भी बंध होता है?

(ग) क्या केवली समुद्घात में मोक्ष हो सकता है?

(घ) सबसे छोटी अवगाहना वाले एक साथ कितने सिद्ध हो सकते हैं?

(ङ) व्यंतर देवों के दूसरी कोटि के प्रथम चार देवों के नामों का उल्लेख करें।

(च) एकसाथ 108 सिद्ध होने के बाद कितने समय तक 108 सिद्ध नहीं हो सकते।

(छ) क्या बंधी हुई कर्म वर्गणा का परोक्षज्ञानी ज्ञान या अनुभव कर सकते हैं?

(ज) केवली समुद्घात किया जाता है या स्वतः होता है?

प्र.5 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त में दीजिए – 12

(क) क्या बंध आत्मा की स्वतंत्र क्रिया है?

(ख) पुण्य का बंध कौनसा भाव, कौनसी आत्मा?
(ग) कर्म के कर्म लगता है या आत्मा के कर्म लगता है?
(घ) योजन के चौबीसवें भाग में केवल सिद्ध ही रहते हैं या और कोई भी जीव रहते हैं।
(ङ) दूसरे समुदाय की वेशभूषा में रहते हुए भी कोई मुक्त हो सकता है?
(च) क्या सभी केवलियों के केवली समुद्घात होता है?
(छ) किल्विषिक देव कौन हैं?
(ज) देवताओं का आहार कौनसा होता है?

प्र.6 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर व्याख्या सहित दें – 12

(क) तीन लोक (उर्ध्व, अधो और मध्य) में कहाँ से मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है?
(ख) क्षयोपशम के बत्तीस गुण निर्जराजन्य हैं, क्या क्षायक व उपशम के गुण भी निर्जराजन्य हैं?
(ग) केवली समुद्घात का क्रम क्या है?
(घ) उजला लेखे, करणी लेखे निर्जरा का क्या स्वरूप है? तथा क्या अपने आप होने वाली निर्जरा को तत्त्व के अन्तर्गत माना है?
(ड.) क्या सिद्धों की कोई अवगाहना भी है? व क्या सिद्धों की पर्याय भी बदलती है?

गीतिका (दस दान, अठारह पाप) – 20

प्र.7 कोई चार पद्य अर्थ सहित लिखें – 16

(क) ''असंजती श्रावक.....आप ए''।
(ख) ''आरंभ कीयां.....लिगार ए''।
(ग) ''इविरत सूं.....पारिखा ए।
(घ) ''जे जे कीधो.....फली ए''।
(ङ) ''आय मिले.....सूं कही ए''।
(च) ''नवमें दसमें.....थी थाय ए''।

प्र.8 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दें – 4

(क) संग्रह दान किसे कहते हैं?
(ख) कायंती दान किसे कहते हैं?
(ग) मूर्ख व्यक्ति किस दान में मिश्रधर्म की प्ररूपणा करते हैं?
(घ) सुपात्र दान देकर जो मन में अहंकार नहीं करता, उसे क्या प्राप्त होता है?
(ङ) कौनसी निर्मल करणी पूर्णरूप से फलवान बनती है?
(च) किन आगमों से रहस्य निकालकर व्रत–अव्रत का पृथक्करण किया गया है?